तर्ज- ये माना मेरी जान मोहब्बत सजा है

उतरते अर्श से यूं हक ने कहा था,
रूहों मेरी न हमें भूल जाना
न भूलने का वादा किया था,
देखो आजमाए के हमने कहा था

1- भेजूंगा रूह अपनी तुमको बुलाने को
याद करना वायदा किया संग हमारे जो
लेके दौड़ो इश्क है हमने बुलाया
रूहों मेरी न हमें भूल

2- खातिर तुम्हारी रुहो मैं भी उत आऊंगा
देह धर माफक तुमको जगाऊंगा
कहोगे कौन हैं ये कहां से है आया
रूहों मेरी न हमें भूल

Nijanand App

3- माना माया छलवाली तुमको भुलाती
मेहर मेरी तुमको पल पल जगाती
जाग के रूहों तुम न फिर सो जाना
रूहों मेरी न हमें भूल

4- खातिर तुम्हारी रूहों बार बार आए
देने पहचान अपनी वाणी भी लाये
ये न कहना नं किसी ने बताया
रूहो मेरी न हमें भूल

Nijanand App